31-03-2023

कांगड़ा चाय को यूरोपीय जीआई टैग

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में, हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा चाय को यूरोपियन यूनियन द्वारा जीआई टैग प्रदान किया गया।

त्वरित मुद्दा?

- यह हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में उत्पादित एक प्रकार की चाय है।इसे कांगड़ा घाटी में खेती की जाने वाली चाय की कैमेलिया साइनेंसिस प्रजाति की पत्तियों, कलियों और कोमल तनों से बनाया जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- यह एक उच्च गुणवत्ता वाली चाय है, जो अपने अनोखे स्वाद, सुगंध और रंग के लिए जानी जाती है।
- कांगड़ा घाटी में काली चाय और हरी चाय दोनों का उत्पादन किया जाता है।
- काली चाय के स्वाद में मीठापन रहता है, वहीं हरी चाय में एक वुडी(Woody) सुगंध होती है।
- कांगड़ा चाय को भारत में वर्ष 2005 में ही भौगोलिक संकेतक(जीआई टैग) प्राप्त हो चुका है।
- जीआई टैग मुख्य रूप से कृषि संबंधी, प्राकृतिक या विनिर्मित वस्तुओं के लिए प्रदान किया जाता है, जिनमें अनूठे गुण, ख्याति या इसके भौगोलिक उद्भव के कारण जुड़ी अन्य लक्षणगत विशेषताएं होती है।
- जीआई टैग एक प्रकार का बौद्धिक संपदा अधिकार(आईपीआर) होता है, जो आईपीआर के अन्य रूपों से भिन्न होता है, क्योंकि यह एक विशेष रूप से निर्धारित स्थान में समुदाय की विशिष्टता को दर्शाता

है।

- वर्ल्ड इंटलैक्चुअल प्रॉपर्टी ऑर्गेनाइजेशन (WIPO) के अनुसार जीआई टैग एक प्रकार का लेबल होता है, जिसमें किसी उत्पाद को विशेष भौगोलिक पहचान दी जाती है।
- इसका पंजीकरण 10 वर्ष के लिए मान्य होता है तथा 10 वर्ष बाद पंजीकरण का फिर से नवीनीकरण कराया जा सकता है।
- एक बार जीआई टैग संरक्षण प्रदान करने के बाद कोई भी अन्य निर्माता समरूप उत्पादों को बाजार में लाने हेतु नाम का दुरुपयोग नहीं कर सकता है। यह टैग उपभोक्ताओं को भी उस उत्पाद की प्रमाणिकता के बारे में सुविधा और गारंटी प्रदान करता है।
- जीआई टैग का उपयोग उन सभी उत्पादकों द्वारा किया जा सकता है जो अपने उत्पादों को जीआई टैग द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर उत्पादित करते हैं और जिनके उत्पाद विशिष्ट गुण साझा करते हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जीआई टैग, औद्योगिक सम्पत्ति के संरक्षण हेतु पेरिस समझौते के तहत बौद्धिक सम्पदा अधिकारों (आई.पी.आर.) के एक प्रकार के रूप में शामिल किया गया है।
- जीआई टैग, विश्व व्यापार संगठन (WTO) के व्यापार सम्बंधित पहलुओं पर बौद्धिक सम्पदा अधिकार (TRIPS-ट्रिप्स) समझौते द्वारा भी शासित होता है।

भारत को जापान की आधिकारिक विकास सहायता (ओडीए)

समाचार पत्रों में क्यों?

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के अधीन आर्थिक मामलों के विभाग में अतिरिक्त सचिव श्री रजत कुमार मिश्रा और भारत में जापान के राजदूत श्री सुजुकी हिरोशी के बीच पत्रियों (नोट) का आदान-प्रदान किया गया।

त्वरित मुद्दा?

- जापान ने भारत में कुछ प्रमुख परियोजनाओं के लिये आधिकारिक विकास सहायता (Official Development Assistance- ODA) को मंज़ूरी दी है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- वर्ष 1958 से ही भारत और जापान के बीच द्विपक्षीय विकास सहयोग का महत्त्वपूर्ण इतिहास रहा है। पिछले कुछ वर्षों में भारत एवं जापान के बीच आर्थिक सहयोग में लगातार वृद्धि देखने को मिली है।
- पटना मेट्रो रेल निर्माण परियोजना (I) के लिये 5,509 करोड़ रुपए की मंज़ूरी दी गई है। इसका उद्देश्य नए मेट्रो कॉरिडोर का निर्माण करके पटना में यातायात की बढ़ती मांग को पूरा करना है, ताकि शहरी पर्यावरण में सुधार और अर्थव्यवस्था के विकास के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन के शमन में योगदान दिया जा सके।
- जलवायु परिवर्तन प्रतिक्रिया के लिये पश्चिम बंगाल में वन एवं जैवविविधता संरक्षण परियोजना हेतु लगभग 520 करोड़ रुपए मंज़ूर किये गए हैं।

- इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन को कम करना एवं अनुकूल बनाना, पारिस्थितिक तंत्र आधारित जलवायु परिवर्तन उपायों, जैवविविधता संरक्षण तथा बहाली द्वारा पारिस्थितिक तंत्र को संरक्षित और पुनर्स्थापित करना है, ताकि राज्य में सतत् सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान दिया जा सके।
- राजस्थान जल क्षेत्र आजीविका सुधार परियोजना (द्वितीय) हेतु 1,055.53 करोड़ रुपए स्वीकृत किये गए हैं।
- इसका उद्देश्य मौजूदा सिंचाई सुविधाओं और कृषि सहायता सेवाओं में सुधार के माध्यम से जल उपयोग दक्षता एवं कृषि उत्पादकता में सुधार कर राज्य में कृषि तथा सिंचाई क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों की आजीविका में सुधार करना है।
- दिल्ली मेट्रो द्वारा ODA का उपयोग जापानी सहयोग के सबसे सफल उदाहरणों में से एक है।
- भारत की वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (DFC) परियोजना हेतु जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी द्वारा आर्थिक साझेदारी के लिये विशेष शर्तों (Special terms for Economic Partnership- STEP) के तहत उदार ऋण प्रदान किये गए हैं।
- जापान और भारत, जापान के शिंकान्सेन सिस्टम का उपयोग करके भारत में हाई-स्पीड रेलवे के निर्माण पर सहमत हुए।
- भारत-जापान परमाणु समझौता 2016 भारत को दक्षिणी भारत में छह परमाणु रिएक्टर बनाने में मदद करेगा, जिससे वर्ष 2032 तक परमाणु ऊर्जा क्षमता दस गुना बढ़ जाएगी।

दुर्लभ बीमारियों की दवाओं पर नहीं लगेगा आयात शुल्क

समाचार पत्रों में क्यों?

केंद्र सरकार ने दुर्लभ रोगों के इलाज के संबंध में निजी उपयोग के लिए विशेष चिकित्सा उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आयातित सभी औषधियों व खाद्य सामग्रियों को सीमाशुल्क से पूरी छूट दे दी है।

त्वरित मुद्दा?

- यह छूट एक अप्रैल से प्रभाव में आएगी। सरकार ने भिन्न-भिन्न प्रकार के कैंसर के उपचार में इस्तेमाल होने वाले पेमब्रोलीजूमाब (केट्रूडा) को भी बुनियादी सीमा शुल्क से मुक्त कर दिया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- दुर्लभ रोगों के उपचार के लिये दवायें या विशेष खाद्य सामग्रियां बहुत महंगी हैं तथा उन्हें आयात करने की जरूरत होती है।
- सरकार को ऐसे कई प्रतिवेदन मिल रहे थे, जिनमें अन्य दुर्लभ रोगों के उपचार में इस्तेमाल होने वाली दवाओं और औषधियों के लिये सीमा शुल्क में राहत का अनुरोध किया गया था।

- केंद्र सरकार ने सामान्य छूट अधिसूचना के माध्यम से, राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति 2021 के तहत सूचीबद्ध सभी दुर्लभ रोगों के उपचार के सम्बंध में निजी उपयोग के लिये विशेष चिकित्सा उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये सभी आयातित औषधियों व खाद्य सामग्रियों को सीमा शुल्क से पूरी छूट दे दी है।
- इस छूट को प्राप्त करने के लिये, वैयक्तिक आयातक को केंद्रीय या राज्य निदेशक स्वास्थ्य सेवा या जिले के जिला चिकित्सा अधिकारी/सिविल सर्जन द्वारा प्राप्त प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना होगा।
- सरकार ने भिन्न-भिन्न प्रकार के कैंसर के उपचार में इस्तेमाल होने वाले पेमब्रोलीजूमाब (केट्रूडा) को भी सीमा शुल्क से छूट प्रदान कर दी है।
- दुर्लभ रोगों को ऐसे रोगों के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो बहुत ही कम लोगों को प्रभावित करते हैं।
- इसके लिये तीन आधारों; रोग से प्रभवित 'लोगों की कुल संख्या', इसकी 'व्यापकता' और 'उपचार विकल्पों की उपलब्धता या अनुपलब्धता' का उपयोग किया जाता है।
- WHO, दुर्लभ रोगों को आवृत्ति के आधार पर परिभाषित करता है। इसके अनुसार, ऐसा रोग जिससे पीड़ित रोगियों की संख्या प्रति दस हज़ार जनसंख्या में 6.5-10 से कम होती है, उसे दुर्लभ रोग कहा जाता है।
- एक अनुमान के अनुसार, दुनिया भर में ज्ञात दुर्लभ रोगों की संख्या लगभग 7,000 है और इससे पीड़ित रोगियों की संख्या लगभग 300 मिलियन है, जबकि भारत में इनकी संख्या लगभग 70 मिलियन है।
- 'भारतीय दुर्लभ रोग संगठन' के अनुसार, इनमें वंशानुगत कैंसर, स्व-प्रतिरक्षी विकार, जन्मजात विकृतियाँ, हिर्स्चस्प्रुंग रोग (Hirschsprung's Disease- इसमें बड़ी आँत प्रभावित होती है, जिससे मल त्याग में समस्या आती है), गौचर/गौश र रोग (Gaucher Disease- एक आनुवंशिक बीमारी है, जिसमें प्लीहा व लीवर बढ़ जाता है और हड्डियाँ कमज़ोर हो जाती है), सिस्टिक फाइब्रोसिस, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी (पेशीय अपविकास) और लाइसोसोमल भंडारण विकार, जैसे रोग शामिल हैं।

अन्य प्रमुख तथ्य?

राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति, 2021

- राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति, 2021 के तहत उन सूचीबद्ध दुर्लभ रोगों के उपचार के लिये 'राष्ट्रीय आरोग्य निधि' की छत्रक योजना के अंतर्गत 20 लाख रुपए तक के वित्तीय समर्थन का प्रावधान है, जिनके लिये केवल एक बार के उपचार की आवश्यकता होती है।
- इनको दुर्लभ रोग नीति में समूह-1 के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है।
- इस नीति में 'स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों' और 'ज़िला प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्रों' जैसी प्राथमिक एवं द्वितीयक स्वास्थ्य देखभाल अवसंरचना तथा अधिक जोखिम वाले मरीजों के लिये परामर्श के माध्यम से त्वरित जाँच एवं रोकथाम पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।
- इस नीति में दुर्लभ रोगों को तीन समूहों में वर्गीकृत किया है-
  - एक बार उपचार वाले रोग।
  - लंबी अवधि या आजीवन उपचार की आवश्यकता वाले रोग।
  - ऐसे रोग जिनके लिये निश्चित उपचार उपलब्ध है परंतु लाभ के लिये इष्टतम रोगी का चयन करना चुनौतीपूर्ण है।

न्यूज फटाफट (चर्चित स्थल)

एक्वेडोर (राजधानी: क्विटो)

- हाल ही में, दक्षिणी एक्वेडोर में 6.8 तीव्रता का भूकंप आया है।
- **सीमाएं:**
  - यह उत्तर-पश्चिमी दक्षिण अमेरिका का देश है।
  - यह भूमध्य रेखा यानी एक्वेटर पर स्थित है। इसलिए इसका नाम एक्वेटर पर रखा गया है।
  - इसकी सीमा उत्तर में कोलंबिया, पूर्व और दक्षिण में पेरू तथा पश्चिम में प्रशांत महासागर से लगती है।
  - इसमें प्रशांत महासागरीय द्वीप समूह गैलापागोस आइलैंड स्थित है।
  - यह कोस्टा रिका के साथ अपनी समुद्री सीमा साझा करता है।
- **भौगोलिक विशेषताएं:**
  - **उच्चतम बिंदु:** माउंट चिम्बोराजो | यह एंडीज़ पर्वत का एक स्ट्रैटोवोलकेनो है और पृथ्वी के केंद्र के ऊपर उच्चतम बिंदु है।
  - **प्रमुख नदियां:** अमेजन नदी, मारानन नदी (अमेजन नदी का सबसे बड़ा जल स्रोत भी), पुटुमायो नदी आदि।

जॉर्डन (राजधानी: अम्मान)

- भारत और जॉर्डन के बीच रक्षा सहयोग पर दूसरी सलाहकार बैठक आयोजित की गई है।
- **राजनीतिक सीमाएं:**
  - यह अरब प्रायद्वीप में स्थित मध्य पूर्वी देश है।
  - यह सीरिया, इराक, सऊदी अरब, इजरायल और फिलिस्तीन के कुछ हिस्सों (वेस्ट बैंक) के साथ अपनी सीमाएं साझा करता है।
  - जॉर्डन का एकमात्र बंदरगाह अल-अकाबा है। यह अकाबा की खाड़ी (लाल सागर) में जॉर्डन को एक छोटी तट रेखा प्रदान करता है।
- **भौगोलिक विशेषताएं:**
  - **भौगोलिक क्षेत्र (पूर्व से पश्चिम तक):**
    - वादी रम मरुस्थल (यह अन्य देशों में भी फैला हुआ है),
    - उच्च–भूमियां, और
    - जॉर्डन घाटी (यह घाटी विशाल पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश प्रणाली का उत्तर - पश्चिमी भाग
  - **प्रमुख नदी:** जॉर्डन नदी।
  - **उच्चतम बिंदु:** जबल उम्म अद दमी।
  - **निम्नतम बिंदु:** मृत सागर।

स्वीडन (राजधानी: स्टॉकहोम)

- स्वीडन की संसद ने नाटो में शामिल होने की अनुमति देने के लिए एक विधेयक को औपचारिक रूप से मंजूरी प्रदान की है।
- **राजनीतिक सीमाएं:**
  - यह उत्तरी यूरोप में स्कैंडिनेवियाई प्रायद्वीप पर स्थित है। > यह फिनलैंड के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है
  - यह पूर्वी सीमा पर बाल्टिक सागर और बोथनिया की खाड़ी, दक्षिण में ओरेसुंड जलडमरूमध्य दक्षिण-पश्चिम में कैटेगट और स्केगरैक जलडमरूमध्य तथा पश्चिम में नॉर्वे से घिरा हुआ है। ओरेसुंड जलडमरूमध्य दक्षिण में स्वीडन को डेनमार्क से अलग करता है।
- **भौगोलिक विशेषताएं:**
  - **सबसे ऊँची चोटी :** माउंट केबने।
  - **सबसे लंबी नदी:** क्लार - गोटा नदी।
  - **झीलें:** वेनर झील, वैटर झील, मलार झील आदि।

मिस्र (राजधानी: काहिरा)

- मिस्र रुपये में भारत से चावल आयात करने की योजना बना रहा है
- **राजनीतिक सीमाएं:**
  - यह अफ्रीका के उत्तर-पूर्व में स्थित है।
  - यह पश्चिम में लीबिया, दक्षिण में सूडान, पूर्वोत्तर में इजरायल, पूर्व में लाल सागर और अकाबा की खाड़ी, तथा उत्तर में भूमध्य सागर से घिरा हुआ है।
  - मिस्र में स्वेज नहर भूमध्य सागर और लाल सागर को जोड़ती है।
- **भौगोलिक विशेषताएं:**
  - **प्रमुख नदी**: नील (विश्व की सबसे लंबी नदी)।
  - **सबसे ऊँची चोटी :** माउंट कैथरीन।
  - **प्रमुख झीलें -** नासिर झील।